मुनिद्वय अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ९२००६)

मुख्य टाइटल
मंगलाचरण
प्रकाशकीय
समर्पण
आशीर्वचन
सम्पादकीय
अनुक्रमणिका
प्रथम खण्ड – व्यक्तित्व दर्शन
मालवरत्न उपाध्याय श्री कस्तूरचन्दजी महाराज
करुणा के अमर देवता ---------- १
चातुर्मास सूची ---------- ३०
गुरुदेव श्री के प्रेरक-प्रसंग ----------३१
गुरुदेव श्री के वचनामृत बिन्दु ---------- ४०
अभिनन्दन पुष्प ---------- ४४
श्रमण संघ की विरल विभूति ---------- ४६
भक्ति के चार शब्द ---------- ४७
ताजा संस्मरण ---------- ४७
उदार हृदयी के चरणोंमें ---------- ४८
विलक्षण प्रतिभा के धनी ---------- ४९
महामालव के महान रत्न ---------- ५१
हिमालय से भी महान् ---------- ५२
ज्ञान-गरिमा मंडित ---------- ५३
कोरे कागज पर ज्ञान के हस्ताक्षर ---------- ५५
करुणा-कृपा के कुबेर ---------- ५७
हार्दिक अभिनन्दन ---------- ५८
विनम्र पुष्पांजलि ---------- ५९
विनम्र भावांजलि ---------- ६०
एक शब्द चित्र ---------- ६२
करुणा सागर के चरणों में ---------- ६५
मालव की एक विरल विभूति ---------- ६६
त्याग और करुणा की अक्षय दीपशिखा ---------- ६८
अभिनन्दन उद्गार ---------- ७१
कोटि-कोटि हृदयगत प्रणाम ---------- ७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिनन्दन की पंखुड़ियाँ ---------- ७४
सन्त संस्कृति के पावन प्रतीक---------- ७५
यशःप्रशस्ति पत्र ---------- ७६
प्रशस्ति पत्र ---------- ७८
अभिनन्दन पत्र ---------- ७९
पुरातन पीढ़ी के आदर्श सन्त ----------८१
वन्दनीय व्यक्तित्व ---------- ८२
जैनागम तत्त्व विशारद प्रवर्तक श्री हीरालालजी महाराज
जीवन दर्शन ---------- ८३
नक्षत्रों की भाषा ---------- १००
वचन और विचार ---------- १०३
संस्मरणों के प्रकाश में ---------- ११५
आशीर्वचन ---------- ११९
भावांजलि ---------- १२०
हीरा चमकता रहे ---------- १२०
मेरी दृष्टि में ----------१२१
मेरे परम सहयोगी ---------- १२२
प्रवर्तक श्री हीरालाल जी महाराज ---------- १२२
मैंने देखा ---------- १२३
स्नेह की जीती जागती प्रतिमा ---------- १२३
सिद्धान्तप्रिय सन्त ---------- १२५
हार्दिक अभिनन्दन ---------- १२६
अभिनन्दन ---------- १२६
पथ-प्रदर्शक-प्रवर्तक ---------- १२७
मेरे श्रद्धा केन्द्र ---------- १२९
जैन जगत की विमल विभूति ---------- १३०
अभिनन्दन पत्र ---------- १३२
अभिनन्दन पत्र ---------- १३३
द्वितीय खण्ड – मुनिद्वय का संयुक्त अभिनन्दन
शुभ कामना सन्देश ---------- १३५
श्री संघो द्वारा शुभकामनाएँ ---------- १३७
दो पूज्य विभूतियाँ ---------- १४५
पयस्विनी भूमि तू धन्य है ---------- १४८
दो कविताएँ ---------- १५०
अभिनन्दन श्लोकाः ---------- १५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वन्दनांजलि ---------- १५२
करुणा के सागर ---------- १५२
अभिनन्दनीय प्रयास ---------- १५३
अमूल्य निधि ---------- १५४
भावांजलि ---------- १५४
शतशत प्रणाम ---------- १५६
हार्दिक अभिनन्दन ---------- १५६
स्मृति के कुछ मधुर क्षण ---------- १५७
संत जीवन ---------- १५७
मेरे परम तारक ---------- १६०
विरल व्यक्तित्व---------- १६१
अभिनन्दनीय समर्पण ---------- १६२
भावांजलि ---------- १६३
तीन गुण ---------- १६५
एक सच्चा हीरा ---------- १६६
अभिनन्दन ---------- १६७
श्रद्धा के दो पुष्प ---------- १६९
मुनि मणिमाला के दो रत्न ---------- १७०
पद्य विभाग
शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन ---------- १७१
अभिनन्दन एकादशी ---------- १७२
श्रद्धा सुमनांजलि---------- १७३
भारत की सम्पदा ---------- १७४
प्र. श्री हीरालालजी महाराज की जीवन रेखाएँ ---------- १७५
गुरु कस्तूर गुण पच्चीसी ---------- १७६
श्रद्धा सुमन ---------- १७७
शासन के सम्राट ---------- १८०
जय ज्योतिर्धर की ----------१८१
यशमलयाद्रि सम महके महा ---------- १८२
मंगलकामना ---------- १८४
शत-शत वन्दन ---------- १८५
अभिनन्दन हम करते हैं ---------- १८७
कस्तूर गुण ज्ञान ---------- १८८
हीरक चालीसा ---------- १८९
वन्दन ---------- १९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महिमा महके ---------- १९४
श्रमण संघ की थाती है ---------- १९५
चरण वन्दना ---------- १९६
वन्दना---------- १९७
मुनिद्वय अभिनन्दनम् ---------- १९९
दो काव्य ---------- १९९
गुरुगुण गान ---------- २००
करते श्रद्धा अर्पित ---------- २०१
अभिनन्दन शतशतवार ---------- २०२
मालवरत्न श्री कस्तूर ---------- २०३
गुरुदेव श्री कस्तूरचन्द जी महाराज के प्रति---------- २०४
प्रवर्तक श्री हीरालालजी महाराज के प्रति ---------- २०५
समर्पण ---------- २०६

तृतीय खण्ड – मालव-ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गरिमा

मालव इतिहास-एक विहंगावलोकन – डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन ---------- २०७
मालवा-एक भौगोलिक परिवेश – डॉ. बसन्त सिंह----------२११
प्राचीन भारतीय मूर्तिकला को मालवा की देन – डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ---------- २१९
मालव संस्कृति को जैनधर्म की देन – डॉ. बसंतीलाल बंग ---------- २३२
मालवा में जैनधर्म-ऐतिहासिक विकास – डॉ. तेजसिंह गौड़ ---------- २४०
साहित्य एवं कला की पुण्य भूमि-मालवा – श्री रमेश मुनि ---------- २५८
मालव-संस्कृति में धार्मिकता के स्वर – प्रो. श्रीचन्द जैन ---------- २६१
मालवा के श्वेताम्बर जैन भाषा कवि – श्री अगरचन्दजी नाहटा ---------- २६९
भगवान महावीर और मालवपति दशार्णभद्र – मुनि भास्कर ---------- २७९

चतुर्थ खण्ड – धर्म, दर्शन एवं संस्कृति

सम्यक्ज्ञान-एक समीक्षात्मक विश्लेषण – श्री रमेश मुनि ---------- २८३
भारतीय तत्त्व चिन्तन में जड़ चेतन का सम्बन्ध – श्री मुनि समदर्शी प्रभाकर ---------- २९०
जैन दर्शन में जनतान्त्रिक सामाजिक चेतना के तत्त्व – डॉ. नरेन्द्र भानावत---------- ३०१
जैन धर्म के आधार भूत तत्त्व-एक दिग्दर्शन – श्री भगवति मुनि ---------- ३०८
जैन दर्शन में भावना विषयक चिन्तन – डॉ. शान्ता भानावत ---------- ३१४
जैन धर्म में आचार – श्री रीषभदास रांका ---------- ३२२
निक्षेपवाद-एक अन्वीक्षण – श्री रमेश मुनि ---------- ३२८
जैन दर्शन में नैतिकता की सापेक्षता और निरपेक्षता – डॉ. सागरमल जैन ---------- ३३२
अन्तरराष्ट्रीय समस्याओं का समाधान-स्याद्वाद् – श्री अजित मुनि ---------- ३४१
अनेकान्त दर्शन – प्राचार्य ठ.भा. कोठारी ---------- ३४४
प्राकृत भाषा के ध्वनि परिवर्तनों की भाषा वैज्ञानिक व्याख्या – डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन --------- ३४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदर्श गृहस्थ बनाम श्रावक धर्म – कुमारी राजल बोथरा ---------- ३५५
भगवान अरिष्टनेमि की ऐतिहासिकता – श्री देवेन्द्र मुनि ---------- ३५८
हमारे ज्योतिर्धर आचार्य - श्री प्रतापमलजी महाराज---------- ३६३
गुरु-परम्परा की गौरव गाथा – श्री प्रकाश मुनि ---------- ३७३
पंचम खण्ड – जैन ज्योतिष
जैन ज्योतिष साहित्य-एक दृष्टि – डॉ. तेजसिंह गौड़ ---------- ३८१
जैन ज्योतिष एवं ज्योतिषशास्त्री – लक्ष्मीचन्द जैन ---------- ३९२
षष्ठ खण्ड - उपाध्याय श्री कस्तूरचन्द जी महाराज के आज्ञानुवर्ती संत सती गण का सचित्र परिचय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org